आर्योदय

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 333 ARYA SABHA MAURITIUS 13th May to 30th May 2016

संघर्ष जीवन पर विजय

ओ३म् हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।
योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् । ओ३म् खं ब्रह्म ।।

यजुर्वेद ४०/१७

VAINCRE LA BATAILLE DE LA VIE

Om! Hiranmayena pātrena satyasyāpihitam mukham
Yosā vāditye purushah sosāvaham. Om kham brahma.

Yajurveda 40/17

Glossaire / Shabdārtha :

Om – c'est mon nom suprême !, **hiranmayena** –une lumière éblouissante, **pātrena** – provenant d'un couvercle ou d'un rideau doré qui t'empêche de réaliser mes caractéristiques ou mes attributs, **satyasya** – Je suis immortel, impérissable, immuable, infini, éternel et la vérité, **mukham** – ma face (mes caractéristiques), **apihitam** – est cachée, **yah** – celui / celle, **asaw** – est présent, **āditye** – dans le système solaire, **Purushah** - Je suis Dieu tout puissant, omniprésent, resplendissant, éternel en toute ma splendeur, **Sah** – l'être, **Asaw** - invisible, incorporel, **Aham** – c'est moi qui ai, **Kham** – Une présence infinie comme le ciel (omniprésent) et je suis la cause de la dissolution de l'univers, **Brahma** – je suis le créateur de l'univers et il n'y a personne égale ou supérieure à moi, de par mes caractéristiques, actions et spécificités, **Om** – Je suis Dieu, le protecteur et le soutien de tous. Je m'appelle Om.

Avant – Propos

Ce verset est le dernier du 40ème chapitre du Yajur Véda. On y voit la conclusion logique de l'enseignement de ce Véda. On retrouve la première partie de ce verset dans l'Ishopanishad. Ceux qui pensent que les livres sacrés ne prêchent que la spiritualité, une chose abstraite et dénuée des réalités de la vie quotidienne de l'homme ont tort. Ils nous apprennent à mieux vivre dans ce monde et nous dirigent vers le but de notre vie sur terre. Les Vedas sont les connaissances transmises à l'homme par Dieu. Les Upanishads sont l'élaboration des enseignements des Védas par des sages (rishis).

Ce verset nous mène vers le but ultime de la vie de l'homme sur terre : le bonheur Suprême ou la félicité Eternelle (Moksha). Ce sujet interpelle les profanes et soulèvent des questions, telles que:

Q : Quel est le but de notre vie sur terre ?

R : L'âme dans le corps d'un être humain a un but spécifique : se parfaire et atteindre le Moksha, c'est-à-dire la libération du cycle de la naissance et de la mort et savourer le bonheur suprême ou la Félicité Eternelle (*ānanda*).

Q: Est-ce que l'âme ne possède pas le bonheur suprême (ānanda)?

R: Non. L'âme est doté de deux attributs: l'existence (*sat*) et la conscience (*chitta*) tandis que Dieu est *sat-chitta- ānanda*. Dieu existe ; Il est conscient ; Il est le bonheur Suprême.

L'âme ne possède pas le troisième attribut (*ānanda*) et il désire l'obtenir. Pour y arriver elle doit assumer la forme de vie humaine (naître) et y vivre. Elle doit affronter entre autres - des problèmes, des difficultés, des obstacles, de la souffrance, du mal, des soucis, de la misère, du découragement, de la persécution ; des choses inévitables dans la vie qui n'épargnent personne dans cet univers.

Contre vents et marées les sages persévèrent et atteignent le but.

Q: Quand est-ce que l'âme atteint la félicitée Eternelle (ānanda) ?

R: Quand elle atteint la réalisation de l'Etre Suprême et sentir sa présence en soi, tout autour de soi et partout dans l'univers.

Q: Est-ce que l'âme peut le voir dans son corps physique ?

R: Oui. Elle a la capacité de le faire, mais elle n'y arrive pas car elle ne connait pas la méthodologie ou le chemin qu'il lui faut emprunter.

Il y a un autre verset du Yajur Veda qui nous éclaire la voie : 'L'éblouissement par les plaisirs du monde nous empêche de connaitre celui qui a créé toutes ces choses qui existe dans cet univers. C'est Dieu, l'être suprême. Cet être n'est pas nous. Il diffère de nous. Il est bien présent en nous.

Ainsi il est la première entité dans notre corps physique, l'âme est la deuxième et le corps est la troisième. Mais l'âme normalement n'arrive pas pas apercevoir l'être Suprême, bien qu'il soit aussi proche d'elle.

L'âme succombe aux charmes des plaisirs du monde. C'est le brouillard épais qui empêche l'âme de se connecter à Dieu. Elle le pourra quand la lumière du savoir, de la dévotion et la spiritualité dissipera ce brouillard.

(..............à suivre)

N. Ghoorah

प्रो० सुद्युम्न आचार्य

प्रोफ़ेसर सुद्युम्न आचार्य का प्रवास हमारे देश में एक मास तक रहा। उनका विदाई-समारोह शनिवार २१ मई को ऋषि दयानन्द संस्थान, पाई में बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, श्री राम आर्य जैश्वाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

मध्यप्रदेश, भारत में सतना ज़िले के एक छोटे गाँव में ९ जनवरी १९४७ को सुद्युम्न जी का जन्म हुआ। घर पर सामान्य शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वाराणसी में पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी के चरणों में 'पाणिनि महाविद्यालय' में संस्कृत व्याकरण शास्त्र का अध्ययन प्रारम्भ किया। अष्टाध्यायी के ४,००० सूत्र तथा धातुपाठ आदि के कण्ठाग्र करने के पश्चात् अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त आदि का विधिवत् अध्ययन

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

महिलाओं का उद्धार

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हिन्दू महिलाओं के उद्धार में एक अद्वितीय आंदोलन चलाया था। उनका नारा यह था कि एक शिक्षित नारी की विद्वत्ता, सुशीलता, योग्यता और सहनशीलता के आधार एक उत्तम परिवार, श्रेष्ठ समाज तथा राष्ट्र की समृद्धि निश्चित होती है।

नारियों की शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक-शक्ति पुरुषों के बराबर होती है, परन्तु सदियों से हमारे समाज में महिलाओं को समानाधिकार नहीं दिया जाता रहा, जिन कारणों से अधिक हिन्दू महिलाएँ अनपढ़, नादान, अँगूठा छाप और लाचार थीं। उनके प्रति घोर अन्याय, अत्याचार और दुर्व्यवहार देखकर आर्यसमाज ने उन असहाय नारियों के कल्याण निमित्त उत्तरदायित्व लिया। उन्हें अपनी शक्तियाँ पूर्ण रूप से विकसित करने का अवसर दिया। जिन स्त्रियों की जीवन-सीमा घर की चार दीवारी तक ही सीमित थी, आज वे ही स्त्रियाँ आर्यसमाज के पूरे सहयोग से अपनी शक्ति, योग्यता, बुद्धिमत्ता और वीरता का चमत्कार दिखाकर हमारे आधुनिक समाज में सम्मानित हैं।

आर्यसमाज ने नारी-शिक्षा की जो ज्योति प्रज्वलित की थी, आज उसी से प्रकाशित होकर हमारी महिलाएँ पुरुषों के साथ-साथ अनेक क्षेत्रों में बराबर विकास कर रही हैं। नारी-उद्धार के आंदोलन से नारी-जाति में एक नई चेतना जागरित हुई। उन्हें अपने अस्तित्व की पूरी पहचान होने लगी। जिन कन्याओं को पाठशाला में कदम रखने का अधिकार नहीं था, वे आज ऊँची शिक्षा ग्रहण कर रही हैं, धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करके वेदपाठी और अग्निहोत्री बन गई हैं। वेद-मन्त्रों के शुद्ध उच्चारणों से पुरुषों को प्रभावित कर रही हैं। अपने बौद्धिक शक्ति का प्रमाण देकर पुरुषों को चकित कर रही हैं।

आज हमारी माता-बहनें विभिन्न धंधों में अपना पूरा सहयोग देकर अपने परिवार, समाज और राष्ट्र का उत्थान करने में मदद दे रही हैं। हमारी महिलाओं के धैर्य, साहस, परिश्रम और अनुभव बड़ा सराहनीय है। हमारी माताएँ तो जग-जननी कही जाती हैं। वे अपनी संतानों के सुख-शान्ति और आनन्द में अपनी जिन्दगी गवाँ देती हैं। अपने परिवारों की समृद्धि में अपने सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर देती हैं। परमात्मा की कृपा से महिलाओं को असीम शक्ति प्राप्त हुई है ।

हमारे देश में हिन्दू महिलाओं के उद्धार में स्वर्गीया श्रीमती सुमंगली देवी, श्रीमती भगवती गयासिंह, श्रीमती कोसिला बुलेल, श्रीमती लखावती हरगोबिन, पंडिता कौशल्या लक्ष्मण तथा अन्य आर्य पुत्रियों ने महिला जगत् में सराहनीय कार्य किया है। हम उनके प्रति अति आभारी हैं। उन महादेवियों के बाद डा० उषा शर्मा जी ने लावेनीर में गुरुकुल का संचालन करके लगभग १० वर्षों तक कई छात्र-छात्राओं को वेदपाठी बनाये। वे मॉरीशस में भ्रमण करती हुई आर्य मंदिरों में धर्मोपदेश देती रही। धार्मिक-कृत्यों द्वारा भक्ति का वातावरण स्थापित करती रहीं । उन्होंने यज्ञ-महायज्ञों का अनुष्ठान करके हज़ारों महिलाओं को प्रभावित किया। आर्यसमाज के इतिहास में उनका नाम बड़े ही आदर से लिया जाएगा। यह उल्लेखनीय है कि लगभग ३० वर्षों से श्रीमती धनवन्ती रामचरण जी प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर आर्य महिलाओं के कल्याण में सराहणीय कार्य आज तक कर रही हैं। हम उनके सेवा कार्यों की बड़ी सराहना करते हैं। हमारी यही आशा है कि हमारी कन्याएँ उनके निःस्वार्थ सेवा कार्यों से अवश्य ही प्रोत्साहित होंगी।

आर्यसभा को गर्व है कि आज लगभग ६० पुरोहिताएँ वैदिक धर्म के प्रचार कार्यों एवं धार्मिक कृत्यों में समर्पित हैं। वे हमारी कन्याओं को धार्मिक शिक्षा प्रदान करने में संलग्न हैं। हमें पूर्णाशा है कि उनके सेवा कार्यों से वेदों के प्रचार-प्रसार में विकास होता रहेगा। हमें पूरा विश्वास है कि हमारी सभी पुरोहिताएँ, अध्यापिकाएँ तथा महिला समाज की सदस्याएँ आर्यसमाज के आंदोलन कार्यों में पुरोहितों, शिक्षकों और समाज सेवकों के साथ मिलकर अपनी विद्वत्ता, योग्यता, सुशीलता, सहनशीलता और सेवावृत्ति द्वारा हमारे समाज का उत्थान करती रहेंगी। पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जीवन की हर मोड़ पर पूरा सहयोग देती रहेंगी।

मातृ दिवस के अवसर पर हमारी यही कामना है कि हमारे देश की सभी माता-बहनें सुखी और आनन्दित हों। संतानों का प्रेम तथा सहयोग माताओं को मिलता रहे। महिला जगत् का उत्थान होता रहे ।

बालचन्द तानाकूर

गतांक से आगे

रामकृत जगेसर - एक सफल व्यक्ति

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के.,आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा मॉरीशस

बालक रामकृत के पूज्य दादा जी और ज्येष्ठ चाचा मोतिलाल की भी यही अभिलाषा थी कि घर का इकलौता पुत्र अच्छा ज्ञान उपलब्ध करे। 'जहाँ चाह है वहाँ राह है' रामलाल शिक्षा का महत्व समझने लगे थे। आर्यसमाज का प्रचार ज़ोर-शोर से हो रहा था। पिता जाकर गुरू विष्णुदयाल जी से मिले और रामकृत की शिक्षा पर बातें कीं जिसके अन्तर्गत और अतिरिक्त पाठ देने की भी माँग की। पंडित जी सें जुलियें आने से पहले राजधानी की पाठशालाओं में काम कर चुके थे। गरीब बच्चों की अतिरिक्त पढ़ाई की ओर ध्यान दे चुके थे। रामलाल से बातें करते हुए पंडित जी भांप गए थे कि रामलाल जी गरीब हैं और मेधावी बच्चे को क्या देना है। पंडित जी ने निःशुल्क पाठ देना स्वीकार लिया। इस प्रकार रामकृत के मार्ग दर्शक पंडित विष्णुदयाल जी रहे। मोरिशस में तो गुरुकुल की परिपाटी नहीं रही जहाँ गुरु के चरणों में बैठकर शिक्षा प्राप्त कर सकते पर उसी पंडित जी के छोटे कमरे को गुरुकुल मान लिया गया। और उसी में बैठकर रामकृत ने जीवन की नींव रखी थी।

उस ज़माने में जिसमें रामकृत का बचपन गुज़रा और किशोरावस्था का प्रवेश हुआ था मोरिशस के गाँवों में माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने का स्कूल अभी नहीं बना था। केवल शहरों में इने-गिने माध्यमिक विद्यालय बन रहे थे। वहाँ भी गरीब परिवार के बच्चों को दाखिल होना घनाभाव के कारण असम्भव था। छठी कक्षा पास करने के बाद इधर-उधर की मामूली सरकारी नौकरी लगना सम्भव था। वह भी विधर्मी बनने के बाद। किसी-किसी परिवार को सरकारी नौकरी से ज्यादा प्यारा अपना धर्म होता था। वे मामूली नौकरी करेंगे पर धर्म परिवर्तन नहीं। उस ज़माने में धर्म भ्रष्ट करने का गुप्त आन्दोलन चर्च की ओर से चल रहा था। उसी का परिणाम है कि बहुत हिन्दू नाम वाले क्रिस्चन होते हैं।

उसी बीच छठी जमात पास करने के बाद अध्यापन की पहली परीक्षा में सफल हो गए रामकृत और स्वेच्छित शिक्षक बन गए उसी रीतू पाठशाला में जहाँ से छठी परीक्षा उत्तीर्ण की थी। पंडित जी के सन्सर्ग में आकर अधिकाधिक ज्ञान अर्जित करने लगा। साहस बढ़ता गया; दिन व दिन उन्नति करता गया। कहावत प्रसिद्ध है कि सब्र का फल मीठा होता है। आगे चलकर बीस रूपये मासिक वेतन प्राप्त होने लगा।

उसी समय एक सोचनीय घटना घटी। भारत से विज्ञानानन्द नामक संन्यासी वैदिक धर्म प्रचारार्थ मोरिशस में अपने ५-६ वर्षों का प्रवासकाल के पश्चात् भारत वापस लौट रहे थे। अपने साथ कुछ विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करवाने के लिए ले जाने की तैयारी कर रहे थे। जैसे मणिलाल डॉक्टर ने वर्षों पहले किया था। रामकृत ने भी जाने की तैयारी में पासपोर्ट आदि बनवा लिये थे।

पर भारत की गरीबी और भिखारी बनकर जीना इन सब बातों को सोचकर इनका विचार बदल गया। स्कूल का अध्यापन कार्य चलता रहा और आगे बढ़ने के लिए पढ़ाई भी जारी रही। कहा जाता है कि – पारस मणि के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है पर हमने तो कभी पारस मणि देखा नहीं है। पंडित जी के स्पर्श से रामकृत को बदलते देखा गया है। सें जूलियें और बोनाकई का दायरा छोड़कर रामकृत जी विष्णुदयाल बन्धुओं का सान्निध्य प्राप्त करने के लिए राजधानी पोर्ट लुईस पहुँच गए। पंडित जी के प्रिय और श्रेष्ठ विद्यार्थी बन गए; यहाँ तक कि पण्डित जी ने अपनी विशाल निजी लायब्रेरी का द्वारा रामकृत के लिए खोल दिया। गुरु जी रामकृत की लगन देखकर आशीर्वाद देते और उनके प्रयास की सराहना करते। संकल्प को श्रद्धा का सहारा मिल जाता है तो पहाड़ की उत्तंग शिखर भी सहज में पार किया जा सकता है।

चाचा मोतीलाल कई वर्षों तक लगातार बोनाकेई आर्यसमाज के प्रधान रहे और पिता जी समय समय पर मन्त्री और कोषाध्यक्ष भी रहे। हिन्दी संस्कृत के ज्ञान के कारण रामकृत को कभी कभी मन्त्री का कार्यभार चाचा व पिता जी के बाद सालों तक सम्भालने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। फ्रेंच भाषा की जानकारी होने के कारण वेद की ऋचाओं का मनमोहक सरज और सरल अनुवाद सदस्यों को सुनाने तो वे मंत्रमुग्द होकर सुनते और भूरि-भूरि प्रशंसा करते। जो भी वैदिक धर्म सम्बन्धी पुस्तकें हाथ लग जातीं वे पढ़कर दम लेते थे। पंडित विष्णुदयाल का मन जिस पर लग जाता वे सहायता करने से तनिक भी नहीं हिचकते। पत्र-पत्रिकाओं और दुर्लभ पुस्तकों का ज्ञान कराते रहते। इन पंक्तियों के लेखक को इस बात का अनुभव है।

जब वे २५ वर्ष की अवस्था के हुए तो घर के बड़े लोगों ने इनको गृहस्थ जीवन में प्रवेश करवाने का विचार हुआ। उन दिनों हिन्दू समाज बहुत रूढ़िवादी था। लड़के-लड़कियों का विवाह बड़े-बुज़ुर्गों द्वारा व्यवस्थित विवाह होता था। आर्योपदेशक पं० रामकृष्ण फ़ोकीर ने अपनी सुपुत्री का विवाह करने की माँग की और स्वीकार भी हो गया। कुछ ही समय बाद विवाह संस्कार सम्पन्न हुआ। और उस दम्पति की आठ संतानें हुईं – छः लड़के और दो लड़कियाँ। लड़कों के नाम इस प्रकार है – वेदमित्र, धर्म मित्र, विश्वामित्र, देवमित्र, यश मित्र और छठा जयमित्र। दो लड़कियों के नाम भी एक से एक सार्थक और सुन्दर रखे गये। बड़ी लड़की प्रियम्बदा और दूसरी सारन्धा। ऐसे नाम आर्य समाजी ही दे सकते हैं बिना पंचाँग देखे। आर्य समाजी नाम पत्र नहीं बनाते।

मोरिशस के पूर्वी प्रान्त में आर्यसमाज के कार्य क्षेत्र में अनेक सज्जनों के नाम प्रचलित थे। साधु रामनारायण, रामरत्न शहज़ादा, पंडित बासदेव दोमा, पं० विषारद बिहारी। प्रधान मणिलाल जगेसर आदि। रामकृत इन महान् आत्माओं की सलाह पर आर्य सभा के अवैतनिक पुरोहित बनें और अपने समाज और आस-पास के गाँवों में पाये जाने वाले आर्यसमाजों में यज्ञ-सत्संग करने लगे। यज्ञ के बाद, उनके वेद मंत्र समझाने का ढंग निराला था। वे अपनी अंग्रेज़ी-फ्रेंच भाषाओं के बल पर अपने समझे हुए विचारों को रखते तो लोग याने श्रोतागण प्रसन्न हो जाते। ऐसे पुरोहित उस जमाने में कम क्या नहीं के बराबर थे। आज भी कम है। यह सब पंडित विष्णुदयाल जी का प्रभाव था। पंडित जी तो अंग्रेजी-फ्रेंच और हिन्दी के प्रगाढ़ विद्वान् थे। पर वे अपने प्रवचन के दौरान कभी इन दो भाषाओं का सहारा नहीं लेते। जो भी बोलना होता वे अपनी ओजस्वी भाषा में बोलकर कम पढ़ के कम पढ़े श्रोताओं को भी मंत्रमुग्द कर देते थे। अपने गुरु ही की तरह रामकृत जगेसर भी करने लगे।दिन में जीवनयापन के लिए स्कूलों में अध्यापन करते और शाम को निःशुल्क पाठ ज़रूरतमन्द बच्चों को देते और रविवार को मंदिर में यज्ञ-सत्संग करते।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

पृष्ठ १ का शेष भाग

किया। पश्चात् दर्शन-शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वानों से आस्तिक-नास्तिक दर्शनों का अध्ययन किया।

तदनन्तर 'सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय' से शास्त्री, आचार्यादि की सभी कक्षाएँ प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कीं। पुनः इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम०ए० में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करके ७ स्वर्ण और २ रजत पदक अर्जित किये। पुनः इसी विश्वविद्यालय से दर्शन-शास्त्र विषय में D. Phil. उपाधि प्राप्त की।

इस क्रम में शाहजहाँपुर के एक महाविद्यालय में ५ वर्षों तक व्याकरण, दर्शन के गम्भीर ग्रन्थों का अध्यापन किया। पश्चात् 'पूर्वांचल विश्वविद्यालय' के बलिया ज़िले में अवस्थित कॉलिज में ३४ वर्षों तक स्नातकोत्तर तथा रिसर्च कक्षाओं का अध्यापन किया।

इस क्रम में व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान, दर्शन-शास्त्र तथा भौतिक विज्ञान, प्राचीन तथा आधुनिक गणित इत्यादि विषयों पर अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। उनके सभी ग्रन्थ विभिन्न संस्थाओं से पुरस्कृत हुए। उन्होंने १०० से अधिक शोध-पत्रों का प्रकाशन किया, १५० से अधिक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया, सभापतित्व किया, १० से अधिक साहित्य, गणित आदि विषयों के दुर्लभ ग्रन्थों का सम्पादन, व्याख्या आदि की।

समग्र विशिष्ट उपलब्धियों तथा प्रकाण्ड पाण्डित्य के लिये भारत से महामहिम राष्ट्रपति द्वारा Certificate of Honour से सम्मानित एवं पुरस्कृत हुए। सम्प्रति, वेद वाणीवितान, प्राच्यविद्याशोध-संस्थान के निदेशक पद पर कार्यरत हैं।

डॉ० उदय नारायण गंगू

मॉरीशस में मेरा प्रचार-कार्य

प्रोफ़ेसर सुद्युम्न आचार्य, भारत

मैंने मॉरीशस में एक मास प्रवास की अल्प-अवधि में जीवन के बहुमूल्य क्षण बिताए हैं। यहाँ मुझे लोगों से जो प्रेम, आह्लाद तथा भारत के प्रति जो उत्कट लगाव की भावना दिखाई दी, वह मेरी सबसे बड़ी पूँजी रही है। यहाँ सभी लोग बड़े लगाव के साथ अपने समाजों में कार्यक्रम के लिए ले गए। मैंने देखा कि यहाँ बड़ी संख्या में पुरुष, महिलाएँ आर्यसमाजों में उपस्थित होते हैं तथा वेद-पारायण करते हैं।

मुझे मॉरीशस के चार ज़िलों – ग्राँ पोर, मोका, प्लेन विलियेम्स तथा सावान में कम से कम १६ प्रवचनों का अवसर प्राप्त हुआ। यहाँ मैंने वेद की व्यापकता, प्राचीन काल में इसका व्यापक प्रभाव, विश्व-बन्धुत्व की भावना इत्यादि अनेक विषयों पर व्याख्यान दिये। मैंने मॉरीशस की प्रगति तथा निर्माण के पीछे लोगों में वेदों के प्रति निष्ठा, सद्भाव को कारण बताया। मैं मॉरीशस के इतिहास के आधार पर बता सका कि लोगों को मॉरीशस में स्थापित होने में गीता, रामायण जैसे ग्रन्थों की बहुत बड़ी भूमिका रही है।

मुझे यह जानकर सुखद अनुभूति हुई कि यहाँ मॉरीशस रेडियो से वैदिक वाणी तथा वेद-सुधा, ये दो कार्यक्रम संचालित हैं। मुझे इन कार्यक्रमों के अन्तर्गत कुल ८ प्रवचनों की रिकार्डिंग का अवसर मिला। इनमें मैंने प्रमुखतः ऐसे मन्त्रों की प्रस्तुति दी, जो अत्यन्त आलंकारिक रूप से इस विश्व की तथा इस विश्व की सचाई का वर्णन करते हैं। मैंने बताया कि स्वयं वेद के अनुसार वेद काव्य है तथा इसका रचयिता ईश्वर कवि है। पर अन्य काव्यों से इसकी विशेषता यह है कि यह कभी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता तथा कभी बूढ़ा नहीं होता। इस प्रकार सभी युगों में अपनी प्रासंगिकता बनाए रखता है – **पश्य देवस्य काव्यं न ममार जीर्यति।** इसलिए आगे की भाषाओं के लिए काव्य के सभी प्रमुख तत्त्व – छन्द अलंकार आदि वेदों से ही प्राप्त हुए हैं। जीवन-दर्शन, धर्म-दर्शन आदि विषयों को अलंकार में प्रकट करना वेद की सबसे बड़ी विशेषता है।

मुझे मॉरीशस के दूरदर्शन पर भी एक कार्यक्रम की रिकार्डिंग का सुअवसर प्राप्त हुआ। यहाँ मैंने अपनी माता, गोमाता तथा धरती माता को वेदमन्त्रों के आधार पर प्रस्तुत किया। यहाँ मैंने बताया कि वेद में गाय को माता के रूप में प्रस्तुति के लिये 'गोमातरः' आदि शब्द हैं। साथ ही धरती को माता के रूप में वर्णन के लिये अनेक मनोहारी मन्त्र हैं – **सा नो भूमिर्विसृजतां माता पुत्राय में पयः ।**

इस भावना के कारण वैदिक साहित्य में गो शब्द धरती अर्थ में भी प्रयुक्त होता रहा है। वेद की यह भावना भारत तथा यूरोप के महाद्वीपों में प्रसारित हुई, क्योंकि यूरोप की सभी भाषाओं में गो शब्द के Cow इत्यादि रूपान्तर उपलब्ध हैं। साथ ही इन देशों में भी धरती को भी माता समझने के कारण 'गो' का रूपान्तर 'geo' शब्द इंग्लिश में प्रयुक्त होता रहा है। दूरदर्शन की producer मेरे इस कार्यक्रम से बहुत प्रसन्न हुईं। उन्होंने बताया कि यह सन्देश आगामी मातृ दिवस के लिये बहुत उपयुक्त है। इसकी विशेषता यह है कि मेरा यह सन्देश वैश्विक परिदृश्य (global perspective) में प्रस्तुत करता है।

मेरा एक विशिष्ट व्याख्यान मॉरीशस के सभी आर्योपदेशकों के समक्ष हुआ। यहाँ मैंने 'आर्य' शब्द के मौलिक तथा सार्वभौमिक अर्थ पर प्रकाश डाला। मैं बता सका कि वेद के उल्लेख 'आर्य' शब्द को किसी सीमित वर्ग की ओर संकेत नहीं करते, अपितु यह शब्द विश्व के सभी श्रेष्ठ मानवों के लिये प्रयुक्त होता रहा है। मैं यह बता सका कि वैदिक तथा जैन बौद्ध धर्म की लम्बी परम्परा में यह कभी भी विशिष्ट संज्ञावाचक नहीं रहा। अपितु यह विशेषण वाचक के रूप में प्रयुक्त होता रहा है। स्वयं गौतम बुद्ध ने इस लोकप्रिय शब्द को स्वीकार करते हुए 'आर्यसत्य' 'आर्याष्टांगिक मार्ग' जैसे विशिष्ट शब्दों में इसका प्रयोग किया तथा इसे श्रेष्ठ अर्थ में विशेषणवाचक माना है। यूरोप की जर्मन, आयरिश आदि भाषाओं में इसके रूपान्तर यह प्रकट करने में समर्थ हैं कि इस शब्द का विशेषणवाचक के रूप में व्यापक प्रचार हुआ था। इस स्थिति में यह अतीव स्वाभाविक है कि मॉरीशस के लोग अपने को आर्य कहते हुए गर्व का अनुभव करते हैं।

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

पृष्ठ २ का शेष भाग

मुझे उत्तर प्रान्त में तथा पोर्ट लुइस में आर्य सभा द्वारा कालेजों में छात्रों के समक्ष उद्‌बोधन का अवसर भी प्राप्त हुआ। मैंने उन्हें हिन्दी संस्कृत गीतों के अर्थ तथा गायन भी बताया। छात्रों ने इन्हें बहुत रुचि से सीखा तथा आगे होने वाले कार्यक्रमों के लिए कण्ठस्थ कर लिया। मुझे छात्रों में भारत के प्रति जानने कि बहुत रुचि दिखाई दी। मैं ने जब उन्हें बताया कि वे जो गणित पढ़ते हैं, उनके अनेक प्रमेय वेदों से तथा शुल्व सूत्र से निकले हैं, तो उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि मुझे शास्त्री कक्षा की पुरोहित-पुरोहिताओं के समक्ष व्याख्यान तथा प्रशिक्षण प्रदान करने का अवसर प्राप्त हुआ। मुझे लगा कि यहाँ मेरा वेद, व्याकरण का सूक्ष्म अध्ययन सफल हुआ। कक्षा में सभी लोगों ने इन विषयों पर सूक्ष्म प्रश्न किये, जिनका मैं उत्तर दे सका। मैंने इन कक्षाओं में भाषा विज्ञान के आधार पर वैदिक ध्वनि-विज्ञान का प्रशिक्षण दिया। मैंने प्रातिशाख्य तथा पाणिनि की अष्टाध्यायी के सूत्रों का उद्धरण देते हुए पूरे प्रमाण के साथ अनेक अक्षरों के उच्चारण की विधि समझाई। मैंने ऋषि दयानन्द की 'वर्णोच्चारण शिक्षा' में बताए गए अयोगवाह शब्दों के उच्चारण तथा उनके विभेद आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला। मैं ऐसे विषय के स्पष्ट प्रतिपादन में समर्थ हो सका, जिसकी व्याख्या उपलब्ध नहीं होती तथा वे बहुत क्लिष्ट समझे जाते हैं।

मैंने इस प्रशिक्षण के अन्तर्गत वेद-मन्त्रों के सन्धि-समास पर विस्तार से चर्चा की। मैं उन्हें यह बता सका कि संहिता-पाठ, पदपाठ में क्या अन्तर होता है तथा अवग्रह का प्रयोग किन दशाओं में होता है। मुझे अष्टाध्यायी के सभी सूत्र कण्ठस्थ होने के कारण मैं उनके प्रमाण उपलब्ध करा सका। पण्डिताओं ने इन्हें बहुमूल्य माना, क्योंकि मतभेद के अवसर पर इन प्रमाणों की बहुत आवश्यकता होती है।

मैंने अनेक कक्षाओं में श्वेताश्वर उपनिषद् का अध्यापन किया। इसमें भौतिक विज्ञान physics तथा अध्यात्म meta-physics के विभेद पर विस्तार से प्रकाश डाला। मैंने इन कक्षाओं के अन्तर्गत अनुष्टुप, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी जैसे छन्दों वाले श्लोकों का गायन भी सिखाया, जिसे लोगों ने बहुत पसन्द किया। मैंने बताया कि गीता, रामायण आदि के श्लोक प्रायः अनुष्टुप् छन्द में हैं, जिन्हें बहुत साधारण रीति से गाया जाता है। मेरे सिखाए गए गायन के विशेष प्रकार से सभा मन्त्रमुग्ध हो गई ।

मॉरीशस प्रवास की मेरी सबसे विशिष्ट उपलब्धि यह है कि मुझे मॉरीशस के आर्यजनों से बहुमूल्य मुलाकात अवसर प्राप्त हुआ। सभी ने मुझे जिस प्यार, जिस लगाव का परिचय दिया, उसके लिये मैं सबका बहुत आभारी हूँ।

मेरी कल्पना का मॉरीशस यह था कि यहाँ एक लघु भारत बसता है। मेरे यथार्थ का मॉरीशस भी ऐसा ही सिद्ध हुआ। मुझे विश्वास है कि वेद-ध्वजा को आगे बढ़ाने में मॉरीशस के लोग अग्रगामी हैं। वे जिस विश्वास तथा प्रतिष्ठा के साथ वेद के लिये जो कार्य कर रहे हैं, उससे मेरी इस धारणा को बल मिलता है ।

हम विश्वास करते हैं कि भारत के लोग आप मॉरीशसवासियों के साथ वेद की ध्वजा को आगे बढ़ाने में अपना भविष्य देखते हैं। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में 'We stretch arm's length to receive you !!' हम दोनों हाथ फैलाकर आपके स्वागत के लिये मिलते हैं। आप सभी आर्यजनों के प्रति हम पुनः कृतज्ञता तथा आभार प्रकट करते हैं।

इतिहास के अनमोल रत्नों (पन्नों) से लाभ उठाए

हिन्दू मॉरिशस

पं० आत्माराम विश्वनाथ जी जगत् में अपनी प्रांजल भाषा तथा उत्कृष्ट रचनाओं के लिए काफ़ी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। आपका उक्त ग्रन्थ शीघ्र निकलने वाला है। आपकी आधा दर्जन से अधिक प्रकाशित पुस्तकों में से यह एक विलक्षण ग्रन्थ गिना जाएगा। कारण कि वह आप के मॉरिशस प्रवास के दीर्घ अनुभव का निचोड़ है। यह ग्रन्थ क्या है? मॉरिशस के भारतीयों का चलता-फिरता बायस्कोप। सुनने में आया है कि यह बृहत्तकाय होने के कारण काफ़ी संख्या में प्रस्तुत नहीं होगी। इसे लेने के लिए हिन्दी प्रेमी पाठक-पाठिकाओं की शीघ्रता-शीघ्र दौड़-धूप करनी होगी। यह न हो कि मौक़ा चुक जाये। यह भी तो भय है।

नेमनारायण गुप्त, हिन्दी अध्यापक,
मॉरिशस आर्य पत्रिका, १६.१०.१९३६
प्रेषक : प्रह्लाद रामशरण

आर्य सभा मॉरीशस

परीक्षा बोर्ड - पाठ्यक्रम – २०१६-२०१७

सिद्धान्त प्रवेश – दो प्रश्न-पत्र - समय 1 ½ hrs

प्रश्न पत्र (1) *विषय – हिन्दी* *कुल अंक - १००*

(निबन्ध लेखन, पत्र लेखन, अपठित गद्यांश, रचना - व्याकरण)

पाठ्य पुस्तक – (i) हिन्दी प्रवेशिका – प्रथम छः अध्याय
निबेन्ध-लेखन - ३० अंक , पत्र-लेखन - १५ अंक , अपठित गद्यांश - २५ अंक , व्याकरण - ३० अंक — कुल - १०० अंक
सहायक/सन्दर्भ पुस्तक – हमारे महापुरुष - महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रध्दानन्द

प्रश्न पत्र (2) विषय - धार्मिक शिक्षा समय - 1½ hrs कुल अंक - १००

पाठ्य पुस्तक - (i) धार्मिक शिक्षा - भाग ५ और ६ (1st 15 pages) -- डा० सूर्यदेव शर्मा
(ii) बाल शिक्षा (1st 25 pages)

सिद्धान्त रत्न – दो प्रश्न-पत्र - समय – 2 धण्टे

प्रश्न पत्र (1) *विषय – हिन्दी* *कुल अंक – १००*

(निबन्ध, पत्र, अपठित गद्यांश, रचना – व्याकरण)

पाठ्य पुस्तक – सुगम हिन्दी व्याकरण

निबन्ध-लेखन - २० अंक , अपठित गद्यांश - ३० अंक , व्याकरण - २५ अंक , संक्षेपण - १५ अंक , अनुवाद - १० अंक — कुल - १०० अंक
पाठ्य पुस्तक - (i) हिन्दी प्रवेशिका (सातवें अध्याय से अन्त तक)।

प्रश्न पत्र (२) धार्मिक शिक्षा समय – 1½ hrs

पाठ्य पुस्तके – (i) व्यवहार भानु (1st -25 pages) -	१५ अंक
(ii) धार्मिक शिक्षा भाग ७ और ८ (सूर्यदेव शर्मा) (1st -15 pages) -	३० अंक
(iii) धर्म प्रश्नोतरी (सूर्यदेव शर्मा) (1st -15 pages) -	२५ अंक
(iv) साहित्य प्रवेश भाग २ (गोस्वामी तुलसीदास) -	३० अंक
कुल —	१०० अंक

माता निर्माता भवति

श्रीमती प्रियम्वदा जीबन, आर्य भूषण

मातृ दिवस के अवसर पर
एक अक्षर का प्यारा नाम 'माँ'
'माता बिना आदर कौन करे ?
पानी बिना सागर कौन भरे ।'
कितना पावन और मनभावन,
एक अक्षर का प्यारा नाम 'माँ'।
एक तरफ़ है सारी दुनिया,
एक तरफ़ है माँ ।

इस छोटे से शब्द का अर्थ सागर से भी गहरा है। इस नाते के सामने जगत् के सारे रिश्ते सर झुकाते हैं। इसका बखान करते-करते थकते नहीं। हर एक व्यक्ति के नीजी जीवन में इसका ऊँचा स्थान है। किसी भी रूप या रिश्ते के साथ जोड़ो तो वह 'माँ' ही दिखती है। बच्चे प्यार से उसे इस तरह पुकारते हैं - 'माता जी, माँ, मम, मोम, मो, मम्मी, मामा' आदि।

जननी, दादी, सास, बहू, बहिन, बेटी, फूफू, मौसी, चाची, मामी, भाभी, भौजी, भगीनी, भतीजी, पोती, नातीन, दीदी कहो वह है माँ ।

इन रिश्तों से जुड़ी नारी के लिए एक छोटा ही शब्द सही, लेकिन वेदों में उसको प्रथम गुरु माना है। जग में ऋषियों ने उसका गुणगान कर उसे महान् स्थान प्रदान किया है। माँ के प्रति तो सदा हमारा सकारात्मक एवं पवित्र विचार ही होते हैं। आखिर माँ 'माँ' होती। उसका आशीर्वाद, समझो भगवान का आशीर्वाद है।

इन जुड़े रिश्तों के साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर, हम सब मिलकर देखें कि उनकी क्या-क्या भूमिकाएँ हैं। अपने देश के, समाज और राष्ट्र को क्या प्रदान करती है। वह कौन सी चीज़ है जो उसमें नहीं है :- देश के राष्ट्रपति, देश के प्रधानमन्त्री, अस्पताल में डॉक्टर, नर्स, सेविका, दफ्तर में क्लर्क, न्यायाधीश में कार्यरत, बारीस्टर, स्कूल या कॉलिज में अध्यापक, प्रोफ़ेसर, इन्जिनियर, चालक, अभिनेत्री, गायिका, नर्तकी, पुलिस विभाग में कार्यरत, इन्सपेक्टर, बस द्रायवर या कन्डक्टर, कारखानों में काम करने वाली, बावरची, खेतों में मज़दूर, हलवाई, व्यापार का काम, पुरोहिता, सामाजिक कार्य क्षेत्र, मिडिया में कार्यरत है 'माँ'।

इतनी सारी जिम्मेवारियाँ सम्भालते हुए देखकर ऐसा लगता है कि माँ जिन्दगी भर हरेक क्षेत्र में पुरुषों के साथ-साथ कदम से कदम मिलाकर चलती है। वह पुरुषों से कम नहीं है। वह तो संसार चलाती है। अर्थात् सही रूप में निर्मात्री है।

हम सब मिलकर विचार करें क्या एक साल में सिर्फ़ एक दिन ही माँ को स्मरण करना चाहिए। कोई विशेष दिन होना चाहिए। जबकि माँ हर पल, हर एक क्षण अपने बच्चे को सीने से लगाए रहती है। बच्चा देश में हो या परदेश में, छोटा हो या बड़ा-बूढ़ा लेकिन माँ की नज़र में वह सदा बच्चा ही रहेगा। सदा उत्तम मार्ग दर्शाने वाली होती है।

'नासवी मात्री समो गुरु'

अर्थात् माता के समान इस संसार में कोई गुरु नहीं है। श्रेष्ठतम शिक्षा द्वारा भविष्य में आने वाली कल की माताएँ सुशिक्षित बनेंगी।

मनुमहाराज जी ने अपनी मनुस्मृति में इस तरह वर्णन किया है –

'उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्ययाणां शतं पिता।
सहस्त्रं तु पितृन्माता गौरवेणाति रिच्यते ।'

नु २/१४५

अर्थात् उपाध्याय से दस गुण आचार्य, आचार्य से सौ गुणा पिता और पिता से सहस्त्र गुणा माता का गौरव है।

एक बार यदि हम अपने दैनिक जीवन में पितृयज्ञ को स्थान दे देंगे तो संसार में कोई भी माँ दुखी नहीं होगी। अपनी माँ के लिए हम जितना कुछ करेंगे कम ही साबित होगा। उसके ऋण से हम उऋण नहीं हो पाएँगे। अन्त में सभी माताओं के चरण में श्रद्धा-सुमन समर्पित हैं।

दो पल की जिन्दगी है।
इसे जीने के सिर्फ़ दो असूल बना लो
रहो तो फूलों की तरह और
बिखरो तो खुशबू की तरह
माँ का आशीर्वाद भगवान् का आशीर्वाद है।
सभी माताओं को मेरी शुभकामनाएँ हैं ।

पृष्ठ २ का शेष भाग

उनका गृह विद्या का केन्द्र बन गया। इन सब के अलावा नौजवानों को आकृष्ट करने के लिए एक ड्रामाटिक क्लब भी अपने ही यहाँ बना लिया था। दीपावली आदि पर्वों के अवसर पर नाटक का प्रदर्शन करते। गाँव भर के लोग उससे फ़ायदा उठाते। विशेषकर उस ज़माने में न रेडियो प्रचलित था और न अभी दूरदर्शन का जन्म हुआ था हमारे यहाँ मोरिशस में।

जब दिसम्बर १९३९ में पंडित विष्णुदयाल प्रोफेसर और एम०ए० बनकर आये तो मोरिशस के भारतीयों के बीच धर्म, संस्कृति और भाषा को लेकर एक नया दौर शुरू हुआ। उधर आर्यसमाज का प्रचार कार्य प्रतिनिधि सभा और परोपकारी सभा द्वारा चल ही रहा था। राजनीति में भी उथल पुथल मच रही थी। चारों तरफ़ जागरण ही जागरण हो रहा था। उन्हीं चालीस के वर्षों में महायज्ञ हुआ, हिन्दी साहित्य सम्मेलन लगा; पुस्तकों की प्रदर्शिनी लगी। हिन्दी प्रचारिणी सभा की ओर से परिचय की परीक्षा का आयोजन आरम्भ हुआ। धर्म व संस्कृति के सिवा हिन्दी भाषा का प्रचार ज़ोरों से चलने लगा।

लगभग २० वर्ष अध्यापन करने के बाद रामकृत जी उपमुख्य अध्यापक बनें और थोड़े ही दिन पश्चात् मुख्य अध्यापक बन गए। और अन्त में मास्टर नाम से लोग जानने लगे। जैसे छत्तर मास्टर, भोला मास्टर और मोती मास्टर हो गये थे। मोरिशस के आर्यसमाज में अभी तक यह परम्परा जारी है। चुड़ामणि मास्टर, चिन्तामणि मास्टर आदि हैं। मास्टर गोबरधन तो अभी हाल में १०१ साल की उम्र में चल बसे।

स्वामी ध्रुवानन्द के अथक प्रयास से परोपकारिणी और प्रतिनिधि सभा जो अलग-अलग हो गई थी। एक हुई और नाम धरा गया 'आर्य सभा मोरिशस'। मास्टर जगेसर उस सभा के पहले मंत्री बनें और लगातार तीन वर्षों तक उक्त गुरुतर भार को सम्भाला।

अपने लम्बे जीवन के दौरान अनेक बार विदेश यात्रा भी की और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग भी लिया। ६० साल की उम्र में सरकारी नौकरी से अवकाश तो ले लिया पर सामाजिक सेवा से निवृत्त नहीं हुए। मास्टर जी आजीवन सामाजिक समस्याओं से जुझते रहे। कभी हिन्दी स्कूल के वार्षिकोत्सव में मन्त्री की भूमिका निभाई तो कभी संन्यासियों के भाषाओं पर अंग्रेजी व फ्रेञ्च में टिप्पणी करते रहे। ढलती उम्र में भी धार्मिक कार्यों में सम्मिलित होते रहे और अन्त में अपने अभिन्न मित्र श्री लक्ष्मी नारायण गरोबी के गृह पर यज्ञ करते हुए अस्वस्थ सा महसूस करने लगे। घर पहुँचते पहुँचते स्थिति बिगड़ती गयी और देखते-देखते एक उग्र हृदय दौरा पड़ा। उसी रोग से ग्रस्त होकर १० लम्बे वर्षों तक रूग्न शैया पर पड़े रहे और आखिर में प्राण पखेडू उड़ ही गये। इस प्रकार मास्टर जी की जीवन लीला समाप्त हुई। पर मान रह गया। पीढ़ी दर पीढ़ी उनको याद किया जाएगा।

Interview du Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanacharya

Yogi ji, merci de répondre à l'appel pour un entretien.

(Entretien réalisé par Mons. S. Peerthum, Secrétaire, Arya Sabha Mauritius)

Q. 1 : Vous êtes à l'Arya Sabha depuis quand?

Je suis ancré dans l'Arya Samaj depuis l'enfance. J'ai grandi au sein d'une famille où la participation au Satsangh du dimanche à l'Arya Samaj Mandir était l'agenda obligatoire de tous. L'autre outil qui forgea cette relation avec la philosophie Védique était le Yajna hebdomadaire à la maison suivie des contes prêchant les valeurs humaines.

Je suis *Life-Member* de l'Arya Sabha depuis 1983. J'ai servi le Sabha en tant qu'auditeur, à titre bénévole, de 1985 jusqu'en 2003. Je suis au service de l'Arya Sabha à plein temps depuis avril 2004

Q. 2 : Et la liste du travail accompli depuis 2004?

Je tiens à remercier Dieu et les divers collaborateurs pour les projets menés à bon port qui inclut entre autres :

Shāririka Unnati ou l'aspect matériel

(1) La rénovation de l'Arya Mandir de Goodlands pour le *soft-launching* du collège DAV du nord. (2) La construction des phases 1, 2 et 3 du collège DAV de Morcellement St. André + l'obtention du terrain contigu de 2 ½ arpents sur quoi on a érigé la 4ème phase du collège. (3) Dr. Chiranjeev Bharadwaj Ashram de Belle Mare. (4) Smt. Foolbasseea Ashram de Chemin Grenier. (5) DAV Degree College. (6) La donation de M. & Mme. Ramalingum Moonsamy à Triolet. (7) La donation de Mme Taukoor à Nouvelle France. (8) La donation de M. Govindramen à Trois Boutiques à Union Vale. (9) Les lègues de Mme. Chuttur à Quatre Bornes. (NDL : *On a débuté le projet 2 juste à temps, en 2004 car la réforme de 2005 avait annulé le concept des collèges de la Forme VI; Les projets 3 & 4 étaient en attente depuis plus de 25 ans ; les 6 & 7 depuis 3-4 ans).*

L'apport monétaire :

(1) Le rapatriement des fonds (Rs1, 3 millions) légués par M. Ramkalawon de la Grande Bretagne. (2) Rs10 millions comme financement additionnel au projet du collège à Morc. St. André suite à la réforme de 2006 du secteur éducatif. (3) Rs8 millions du DCP - l'Union Européenne aux projets de Chemin Grenier et Belle Mare. (4) Le *'return on investment'* ou surplus annuel au nom du collège DAV de Morc. St. André.

Ātmik ou adhyātmik unnati ou l'aspect spirituel

(1) les Yajnas avec des herbes médicinales pour la lutte contre le *Swine Flu*. (2) *L'Ashwamedha Yajna* à travers l'ile en 2009. (3) Le Yajna quotidien aux collèges DAV. (4) Des dizaines de présentations sur le Satyārtha Prakāsh, la vie et les œuvres du Maharishi Dayānand Saraswati, l'Ārya Samāj, les valeurs universelles énoncées par les sages Manu (*ManuSmriti*) et Patanjali (*Yog Darshanam*).

***Sāmājik unnati* ou l'aspect social**

J'ai aussi travaillé sur des représentations juridiques et affaires en cours de justice pour sauvegarder les intérêts du Sabha. J'ai animé des séminaires sur les valeurs humaines pour mieux gérer notre vie, y compris le SIDA, la toxicomanie, les relations conflictuelles, etc.

Les projets complétés ont permis à nombreuses personnes d'avoir un emploi - le gagne-pain quotidien, à d'autres une meilleure retraite, un statut social, etc. Il suffit un peu d'imagination pour percevoir l'effet boule de neige autour d'eux - les membres de la famille de ces mêmes personnes qui vit une vie honorable suite à l'emploi au sein de ces institutions. Il y a aussi un bon nombre de bénéficiaires (élèves du collège DAV qui ont terminé leurs études et tiennent une vie saine de par l'éducation et la formation qu'ils ont reçus, les résidents des Residential Care Homes, etc.)

Je suis au Sabha les jours de semaine pour le travail quotidien. J'anime des cours hebdomadaires sur le Yoga Darshan les vendredis soir, le Satyārtha Prakāsh et le Yoga Darshan les samedis matin. Je suis présentement engagé dans la formation des jeunes au sein du *Brahmāshram Ārsha Gurukul* de Trois-Boutiques-Union Vale les samedis et les dimanches.

J'anime des sessions de travail au sein des Arya Mandirs, touchant surtout les jeunes en hindi, anglais, français et créole. Les sujets abordés sont entre-autres : la pensée positive, la méthodologie de l'apprentissage pour réussir dans ses études at ailleurs, les valeurs universelles des Védas, le *self-leadership*. Je verse le *dakshinā* reçus à titre personnel sur le compte du Gurukul.

Q. 4 : Le rythme de vie ?

7 jours sur 7 que je tiens fermement grâce à Dieu …et <u>à titre volontaire</u> - sans paiement ou allocations pour les heures supplémentaires. Je me remet à Dieu, le Juge Suprême – <u>nyāyakāri</u>.

Q. 5 : Et de votre formation car vos interventions couvrent plusieurs domaines ?

J'ai étudié les sciences jusqu'à la HSC. Ensuite c'était le *Banking, Management, Project Management, Social Entrepreneurship* et tout récemment la philosophie Védique. J'ai maintenu contact sur divers sujets à travers la lecture, surtout la relation entre la science, les Védas et la spiritualité.

Q. 6 : Et votre récent parcours sur la chose spirituelle ?

Je ne suis pas les champignons de la dernière pluie en ce qui concerne le *Karma Kānda* ou les rites. J'officiais déjà au Yajnas et autres rites au sein de l'Arya Samaj et des familles depuis 1975.

Le désir d'approfondir mes connaissances sur la spiritualité *(spiritual reality)* m'a poussé à prendre un congé sans solde ***(leave-without-pay)*** en 2011. J'ai été étudiant à plein temps, pendant 4 ans, de la philosophie Védique (Darshan Shāstras) au sein du *one-and-only* Darshan Yog Mahavidyālaya (DYMV). J'ai complété le *Yoga, Sankhya, Vaisheshika, Nyāya et Vedānta Darshans, 11 Upanishads, Satyārtha Prakāsh, RigVedādi Bhāshya Bhumikā, Vyavahāra Bhānu, Āryodeshyoratnamāla, une partie des Védas et autres Ārsha Granthas.*

J'ai suivi une formation poussée sur la méditation Védique ou le *'Saghan Sādhanā Shivir'* au cours de ma dernière année au DYMV. Ce parcours, je l'ai achevé grâce à Dieu et au dévouement des Sanyāsis et Acharyas du DYMV. Cette formation est fondamentale pour celui qui veut mener sa vie au bon port selon les préceptes de Dharma, Artha, Kāma et Moksha.

Je suis retourné le 02 octobre 2015 et repris le travail le lendemain.

Q. 7 : Et les sacrifices ?

Je laisse le soin au public de chiffrer le sacrifice *(<u>sans paye pendant 4 ans</u> …éloigné de la famille …l'adaptation au climat surtout une chaleur inouïe sur deux tiers de l'année …un agenda rigide et structuré …s'asseoir au niveau du sol pendant les casses…etc.).*

Je les perçois comme une étape importante pour rompre avec les maux de la chose mondaine …et raffermir ses liens spirituelle …de surcroît à la réalisation du concept de *Ishāvāsyamidam et Ishvarapranidhāna*, c'est-à-dire que rien n'échappe au regard, à l'écoute et la connaissance de Dieu où on se soumet à la loi divine.

La motivation était accrue car la splendeur de la richesse spirituelle n'a pas de prix et pèse de tout son poids vis-à-vis des sacrifices.

Personnellement je pense que le Sabha n'a d'autre choix que d'approuver la demande de *congé sans paie* pour poursuivre des études similaires car au final le partage de ces connaissances aura des retombées positives sur le progrès spirituel et social du Sabha.

Le Yoga Darshan nous enseigne: c'est ainsi qu'on se fait une place au sommet où les compliments ou calomnies n'ont aucun effet *…dilo lors feuille songe* …et une attention particulière car il y a un bon nombre qui étaleront des peaux de bananes à chaque pas que vous avancez.

Q. 8. D'où vient cette énergie positive ?

Une confiance inébranlable en Dieu. Il est entre autres **Omniprésent** (présent partout à tout moment), **Omniscient** (qui prend note de toute action au mont même qu'elle est commise), **toute-Justice** (qui accorde les récompenses et punitions au moment opportun) et personne n'échappera de la justice divine.

Nous avons le devoir de méditer sur l'attribut **Miséricordieux** (Dieu ne cesse jamais de nous inspirer vers de bonnes pensées, paroles et pratiques) et la tranquillité nous collera comme notre peau.

Q. 9 : Les mots de la fin ?

Un grand merci à Dieu, la famille, les collègues, collaborateurs et équipes au sein des projets et les dirigeants du Sabha. Cet entretien effleurera peut-être un surdosage de la philosophie.

Quand même, je vous réfère à la préface du Satyārtha Prakāsh où Maharishi Dayanand a écrit : *Manushya ka ātmā satya-asatya ka jānane wālā hai tathāpi apne prayojana ki siddhi, hatha, durāgraha aur avidyā ādi doshon se satya ko chor asatyamein jhuk jātā hai…* c'est-à-dire l'âme d'une personne sait bien discerner entre le vrai et le mensonge mais elle a recours à ce qui n'est pas vrai car elle se noie dans la violence, le mal et la chaine de l'ignorance pour arriver à ses fins.

Le *roadmap* pour une meilleure gestion de soi-même nous est présenté par Maharishi Patanjali dans la strophe (*sutra*) 1.14 du Yoga Darshanam : *Maitree-karunā-muditā-upekshā-sukha-dukha-punya-apunya-vishaya-bhāvanā-chitta-prasādanam.*

On doit éprouver (i) de l'amitié envers les gens heureux ; (ii) de la compassion envers ceux qui sont dans le besoin ou la douleur ; (iii) de la joie envers ceux qui sont noble dans leurs pensées, paroles et pratiques ; et (iv) de l'indifférence (na rāga, na dvesha : ni d'affection, ni de la haine) envers les méchants, malveillants et autres qui sont les obstacles au progrès physique, moral / spirituel et social de l'homme. Pour ce quatrième type on doit toujours prier pour que le bon Dieu leur donne l'esprit saint …*dhiyo yo naha prachodayāt.*

Koyi bāt nahin & Isvara nyāya karegā : Une première (sutra) : *"koyi bāt nahin* …ce n'est rien" nous permet de garder le calme face à des polémiques. Et si la partie adverse est perturbé par l'absence de réaction de notre part il y a la deuxième strophe (sutra) *"Ishvara nyāya karegā* …Dieu rendra justice".

Que nous soyons constructifs et à l'écoute de l'inspiration divine au fond de nous-même. Sinon venu le moment de la justice divine on dira …on n'a rien fait et on paye les pots cassés. Il faut se dire que la personne qui jette de la boue salit en premier sa main …alors de la diligence dans nos pensées, paroles et pratiques ...*sab se priti purvak dharmānusāra yathā yogya vartanā* où l'emphase est sur la gentillesse, la vertu …etc.

Ces habitues nous permettrons d'être heureux en tout temps, de nous apaiser et purifier sur le plan physique, moral et social. Ainsi on ne donne pas les clés de notre tranquillité dans les mains d'autrui car il nous engloutira dans la turbulence. Ces clés, on les garde soigneusement dans nos mains …on serait toujours calme durant les pires tempêtes.

MOTHER'S DAY

Sookraj Bissessur

The proclamation – **"Matri Devo Bhava"** – spells out that all should worship the mother, pay tribute to her during her lifetime for her merits, devoted service to keep us always happy. Let her never be ill-treated!

Nothing ever created or invented can give a bigger life than a mother.

My most prized possession before or after, anything is the time I share and spend with my mother.

Her memories I'll keep entirely locked in a safe custody called Heart.

I value them more than anything, in this world of suffering, toil and boil.

In a mother's lap children are being raised, praised and also pampered. It is a mother's responsibility to make children beautiful as well as dutiful.

Manu has attached more importance to the mother, than the father or the teacher.

By every child becoming good and excellent, thus mothers are the very makers of society.

The Light of the home is the mother.

The rank of one Acharya or principal is equal to ten ordinary teachers!

The rank of one father is equal to that of hundred Acharyas.

The rank of one Mother is equal to one thousand fathers.

Thus, the respect due to a mother is greater than anything else.

A mother is always here and there, everywhere

But never somebody of nowhere.

My Dear Mother has instilled in me

All the precious values which has made of me the man who I am today.

My mother has always taught me :

Patience is power. Patience is not the absence of action, rather it is timing.

We must harm nobody.

We should always be good to others, and leave the rest in the hands of God.

Love also offers multifarious colours to life and strife.

Happiness only comes when we stop complaining.

And For all these, I owe to you sweet Mother
An eternal debt of gratitude
From womb to tomb.

The means of salvation are the worship of God, in other words, the practice of Yoga, the performance of righteous deeds, the acquisition of true knowledge by the practice of Brahmacharya, purity of thought, a life of activity and so on.

Satyārtha Prakāsh

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं । लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038